सब्र का महत्व

कहानी राइट ब्रदर्स की

हिंदी : अपूर्वा भाटिया

सब्र का महत्व

कहानी राइट ब्रदर्स की

हवाई जहाज़ के आविष्कारक

विल्बर और ओरिविल राईट

यह कहानी उन दो भाइयों की है
जिन्होंने बड़ी मेहनत, सब्र और लगन
से हवाई-जहाज़ का अविष्कार किया.

ऑरविल और विल्बर राइट नाम के दो भाई थे।

एक दिन दोनों भाई अपने एक दोस्त जिमी के साथ खेल रहे थे। वह सब मिलकर खिलौनों को रखने के लिए एक अलमारी बना रहे थे। उन्हें चीज़ें बनाना बहुत पसंद था। और वह अपने पिता का एक विदेश यात्रा से लौटने का इंतज़ार कर रहे थे।

"कभी कभी वह हमारे लिए उपहार लातें हैं," विल्बर ने कहा।

"मुझे बाहर से कुछ आवाज़ आ रही है। लगता है पिताजी वापस आ गए हैं,"
ऑरविल ने कहा।

घर का दरवाज़ा खुला और उनके पिताजी अंदर आये।

"अरे वाह! तुम्हारे पिता तो सच में तुम्हारे लिए उपहार लाये हैं,"
जिमी ने उनके पिताजी के हाथ में एक अनोखी सी चीज़ को देखते हुए कहा।
"पर कितना अजीब सा उपहार है।"

"यह क्या है पिताजी?" राइट भाइयों ने पूछा।

"ये एक नया खिलौना है," पिताजी ने जवाब दिया।
"इसे हवा में उछालो तो ये उड़ता है।"

"क्या ये सच में उड़ेगा?" ऑरविल ने पूछा।
"क्या मैं इसे उड़ा कर देख सकता हूँ?"

"हाँ क्यों नहीं," पिताजी ने कहा।

"ये कुछ-कुछ एक पक्षी की तरह है,“
यह कहते कहते उनके पिताजी ने उस खिलौने को
हवा में ऊपर की ओर उछाला।

खिलौना घूमता-घूमता घर की छत की ओर गया।
खिलौना पक्षी की तरह तो था पर कुछ ही हद तक।

तुम्हें क्या लगता है की जब वो खिलौना छत से
टकराया होगा तब क्या हुआ होगा?

बिलकुल सही।

खिलौना गिरता-पड़ता ज़मीन से आ टकराया।

राइट भाइयों ने जब खिलौने को गिरते देखा तो उन्हें बहुत ही दुःख हुआ।

"ये उड़ तो लेता है पर कुछ ख़ास नहीं," उनके दोस्त जिमी ने कहा।
पिताजी मुस्कुराये।

"एक बार फिर कोशिश करके देखो, क्या पता इस बार ये ज़्यादा
देर तक हवा में रह पाए," उन्होनें कहा।

तो भाइयों ने एक बार फिर खिलौने को घुमाकर हवा में छोड़ा। इस बार वो घूमते हुए कमरे में उड़कर हर जगह जाने लगा।
"उड़ गया! उड़ गया,", लड़के मिल कर चिल्लाये।
"अरे वाह!", जिमी ने कहा।

वैसे तो वे सिर्फ एक खिलौना था पर उससे राइट भाइयों को एक बहुत ही बढ़िया नया विचार आया।

वह दोनों इतना खुश थे की खुली आँखों से सपने देखने लगे। क्या तुम सोच सकते हो की उन्हें क्या सूझा होगा?

"अगर ये खिलौना एक बहुत बड़ा उड़ने वाला यंत्र होता तो?" दोनों भाइयों ने सोचा।

"अगर यह लम्बे समय तक हवा में रह पाता तो?" "हम इस पर चढ़कर इसकी दिशा बदल पाते तो? और अगर हम इसकी मदद से दुनिया भर में कहीं भी जा पाएं तो?"

वह जानते थे की ये बस एक सपना ही था। उस समय लोग गरम-हवा के गुब्बारों की मदद से हवा में काफी ऊंचाइ तक रह पाते और कुछ ग्लाइडर छोटी मोटी दूरी तक उड़ भी पाते थे. लेकिन कभी किसी ने एक असली उड़ने वाला यंत्र नहीं बनाया था।

"कोई भी कभी एक असली उड़ने वाला यंत्र नहीं बना सकता,"

जिमी उनकी बातों पर हंसने लगा। "वो देखो।"

और वो छोटा सा खिलौना एक बार फिर ज़मीन पर आ गिरा।

"पर यह तो सिर्फ एक खिलौना है," ऑरविल ने कहा।
"अगर हम सच में एक उड़ने वाला यंत्र बनाएं तो?"

विल्बर बोला।

"नहीं, तुम कभी भी नहीं बना सकते," जिमी ने कहा।

"मैं अपने घर जा रहा हूँ। वहां मैं अपने खुद के खिलौनों से खेलूंगा।"
और जिमी चला गया।

अगर तो राइट भाइयों के पास समय होता तो शायद वह जिमी की इस बात से काफी नाराज़ होते। पर इससे पहले की वह जिमी के बारे में दुखी हो पाते, एक अजीब से चहकती हुई आवाज़ ने उनका नाम पुकारा।
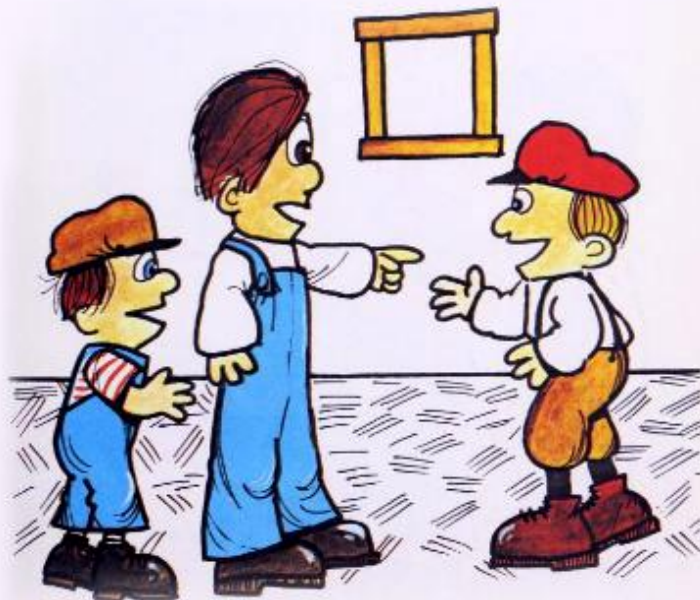
राइट भाइयों ने आसपास देखा। एक चमकती हुई आँखों वाला पक्षी उनकी खिड़की पर बैठा हुआ था। उन्होनें कल्पना करीं की वो पक्षी उन दोनों से बात कर रहा था।

"मैं तुम्हारे दोस्त की अटपटी बातों पर कुछ ख़ास ध्यान नहीं देता,“ उस पक्षी ने कहा। "दुनिया में ऐसी कई चीज़ें हैं जो लम्बे समय तक हवा में खड़े रहने के काबिल हैं। अब मुझे ही देख लो। मैं किसी भी खिलौने से ज़्यादा ऊंचा और ज़्यादा दूर तक उड़ सकता हूँ। तुम अगर अपना समय लो तो तुम भी एक उड़ने वाला यंत्र बना सकते हो, बस उसे एक पक्षी की तरह बनाना। मैं तुम्हारी मदद करूँगा। मैं तुम्हारा सबसे अच्छा दोस्त बन कर रहूँगा।“
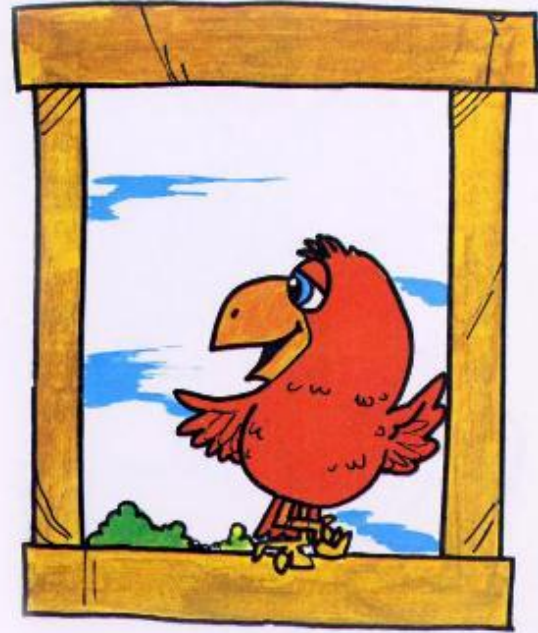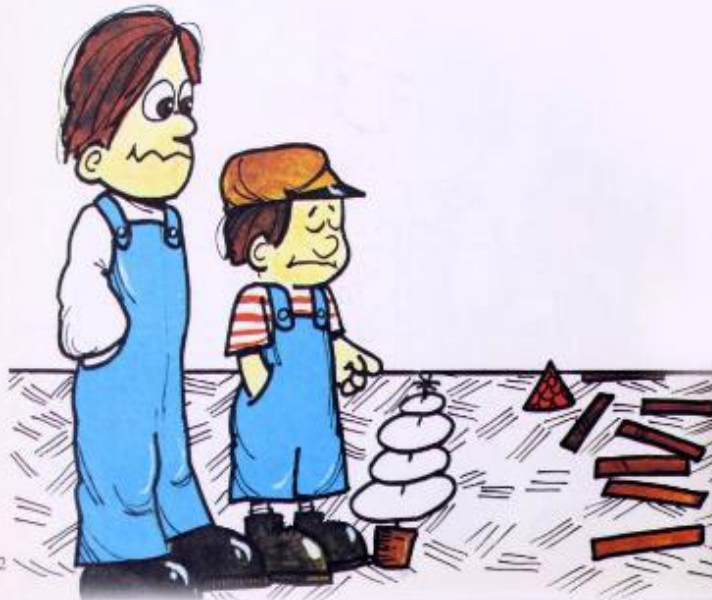
ऑरविल और विल्बर जानते थे की वह उस लाल पक्षी की कल्पना कर रहे थे और असल में यह बात-चीत वह अपने आप से मन-ही-मन कर रहे थे। पर उन्हें उस लाल पक्षी को अपना दोस्त मानने का खयाल खूब पसंद आया।

"मुझे देखो!" पक्षी चहका। "मैं ऊपर उड़ सकता हूँ और नीचे भी। बायीं ओर भी और दायीं ओर भी। एक अच्छा उड़ने वाले यंत्र को हर उस तरीके से उड़ना चाहिए जैसे कि मैं उड़ सकता हूँ।"

"पर कई लोगों ने पक्षियों की तरह यंत्र बनाने की कोशिश की है," ऑरविल ने कहा। "वह सब सफल नहीं हो पाए।"

"और हम यंत्रों या मशीनों के बारे में भी तो कुछ नहीं जानते," विल्बर बोला। "हम शुरू कहाँ से करें, ये हमें कैसे पाता चलेगा?"

"हाँ तो शुरू से शुरू करो!", पक्षी ने सोच समझ कर कहा। "शुरुआत कहाँ से - मशीनों से!"

"हम करके दिखाएंगे!" दोनों भाई ख़ुशी से चिल्लाये। और यह कहते-कहते वह अपने पिता, जो पेशे से अखबार छापते थे, उनके पास भागते-भागते गए।

"पिताजी!", विल्बर बोला।
"क्या हम आपकी मदद कर सकते हैं जब अखबार छापने वाली मदद खराब हो जाये? हम मशीनों के बारे में सीखना चाहते हैं।"

"हाँ मुझे तुम्हारी मदद से काफी आराम मिलेगा। पर तुम्हें वादा करना होगा की यहाँ हर चीज़ में सब्र से काम लोगे," पिताजी ने प्यार से जवाब दिया।

"सब्र का क्या मतलब होता है पिताजी?" भाइयों ने पूछा। "जब किसी काम को पूरा होने में आपकी अपेक्षा से ज़्यादा समय लगे, और आप जल्दबाज़ी मचाने के बजाये शांति से उसके पूरा होने का इंतज़ार करें, उसी को सब्र कहते हैं," पिताजी ने समझाया।

"पर हमें सब्र रखने की क्या ज़रूरत?" भाइयों ने पूछा।
"जब मशीनों में खराबी आती है और वे काम करना बंद कर देती हैं, तो असली दिक्कत को समझने में बहुत समय लग जाता है," पिताजी बोले। "कभी कभी मशीनों को ठीक करना बहुत ही मुश्किल हो जाता है। अगर तुम लोग सब्र रखोगे और बिना हार माने काम करते रहोगे तब ही मशीनें ठीक हो पाएंगी।"

"अपने पिताजी की बात सुनो। यह बहुत ही समझदार हैं," पक्षी बोला।
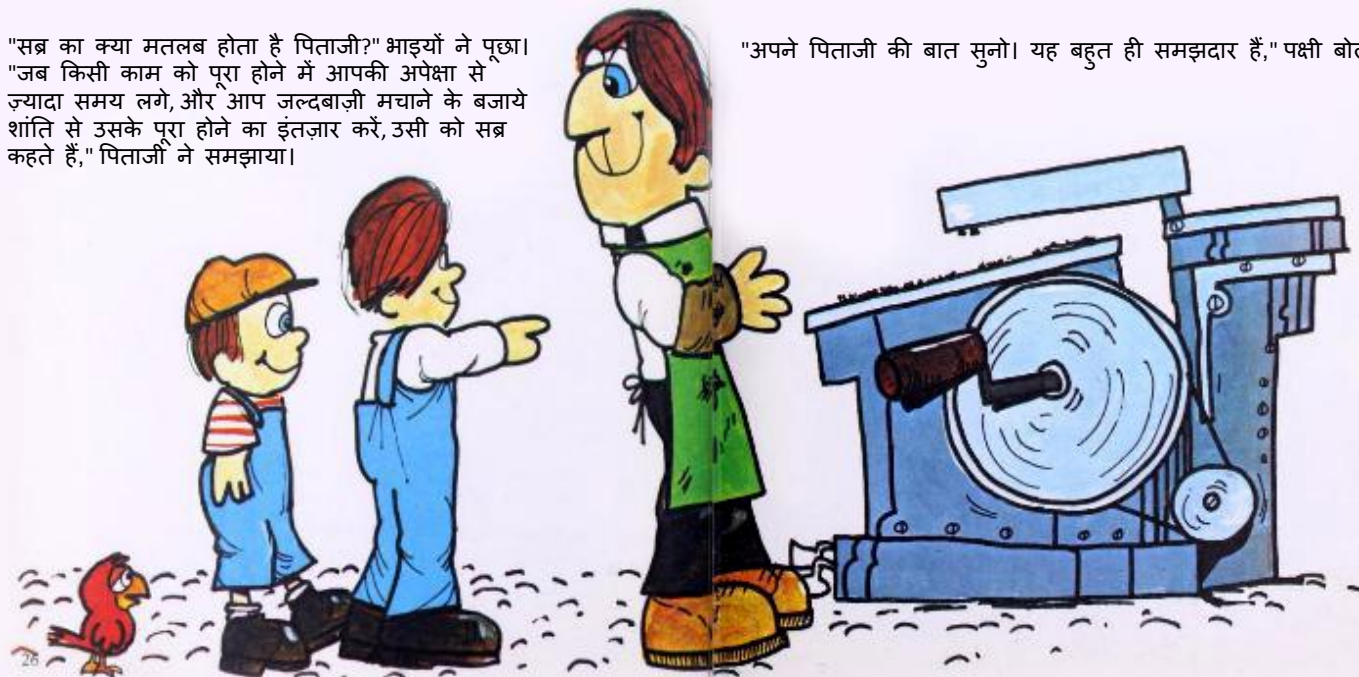
कुछ दिनों बात छापने वाली मशीन में वाकई कोई दिक्कत आ गयी और अखबार नहीं छाप पायीं। ऑरविल और विल्बर ने उसे ठीक करने की कोशिश करी। बहुत मेहनत के बाद भी मशीन ठीक नहीं हो पायी।

"अब क्या करें?" ऑरविल ने कहा।

"यह तो बहुत ही मुश्किल काम है," विल्बर ने बोला।

"हाँ बिलकुल। मुश्किल काम तो है," उनके पिताजी ने कहा। "बहुत सारे काम मुश्किल होते हैं। सब्र रखो। यूँ हार न मानो। बस काम करते रहो और तुम हर चीज़ कर पाओगे।"

"ठीक है। हम कोशिश करते रहेंगे," ऑरविल ने कहा।

"और यह भी कोशिश करेंगे की अगर ज़्यादा समय लगे तो हम गुस्सा न हों," विल्बर बोला।

और वह तब तक कोशिश करते रहे जब तक उन्होनें मशीन को ठीक न कर डाला।

"बहुत ही अच्छे," पिताजी ने कहा।

जैसे जैसे समय बीता, दोनों ही भाइयों ने बहुत सारी अलग अलग तरह की मशीनों पर काम किया। जब वह बड़े हुए तो उन दोनों ने मिलकर एक साइकिल की दुकान खोली। वह साइकिल बनाते और ठीक करते।

वो चमकीली आँखों वाला लाल पक्षी एक दिन उनसे मिलने आया।

"अब जब तुम मशीनों के बारे में इतना कुछ जान चुके हो, तो तुम अपना उड़ने वाला यंत्र कब बनाओगे?" पक्षी ने उनसे पूछा।

"हम बस तैयार ही हैं," भाइयों ने जवाब दिया।
"हमने यंत्र बनाने के लिए बहुत से चित्र और योजनाएं बनायीं हैं। अब हम उन्हें एक ऐसे व्यक्ति को दिखाएंगे जो मशीनों के बारे में हमसे भी ज़्यादा जानता है। देखते हैं वह क्या कहता हैं।"
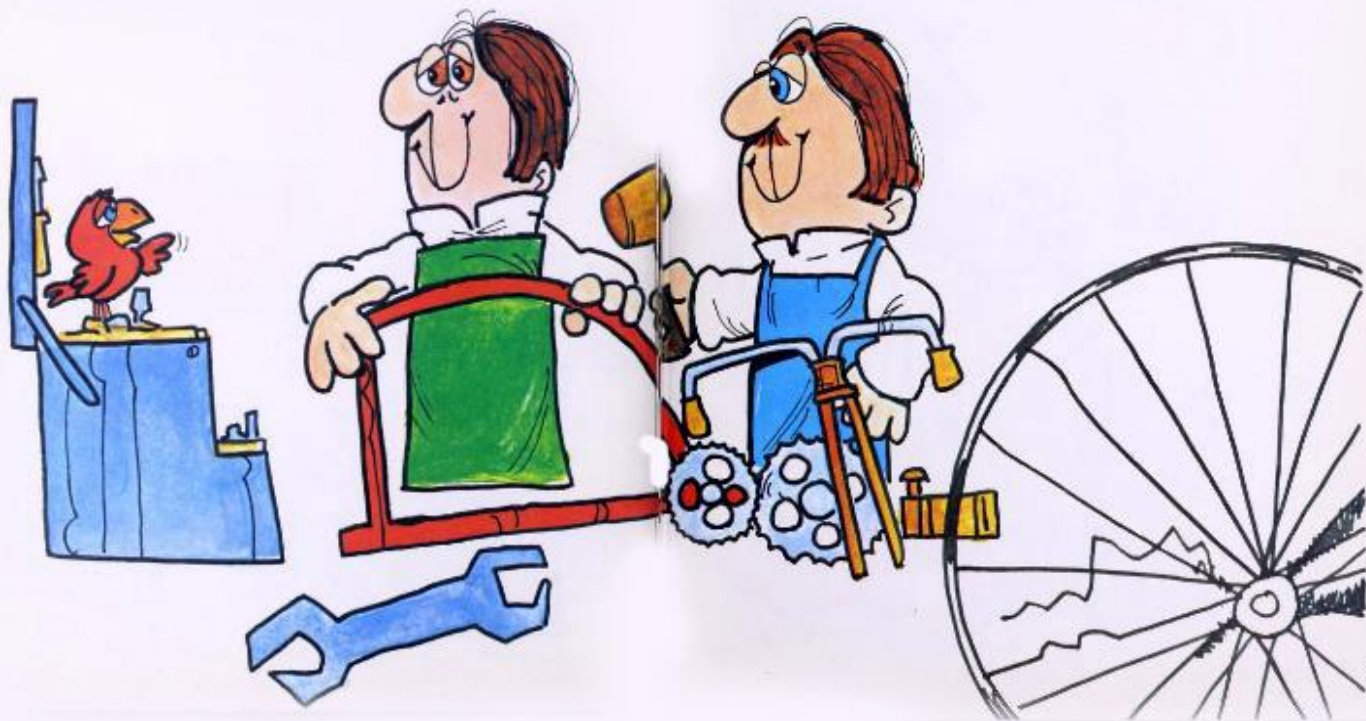
पर क्या तुम जानते हो की उस व्यक्ति ने, जो मशीनों के बारे में राइट भाइयों से भी ज़्यादा जानता था, उनके चित्र को देखकर क्या कहा?
AIR MACHINE
हवा में उड़ने वाली मशीन
उस आदमी ने कहा, "यह कभी नहीं उड़ेगा!"
"IT WILL NEVER FLY"
"तुम्हारी मशीन कभी नहीं उड़ेगी!"
"इसे लगता है की यह वाकई सब जानता है," पक्षी ने कहा।
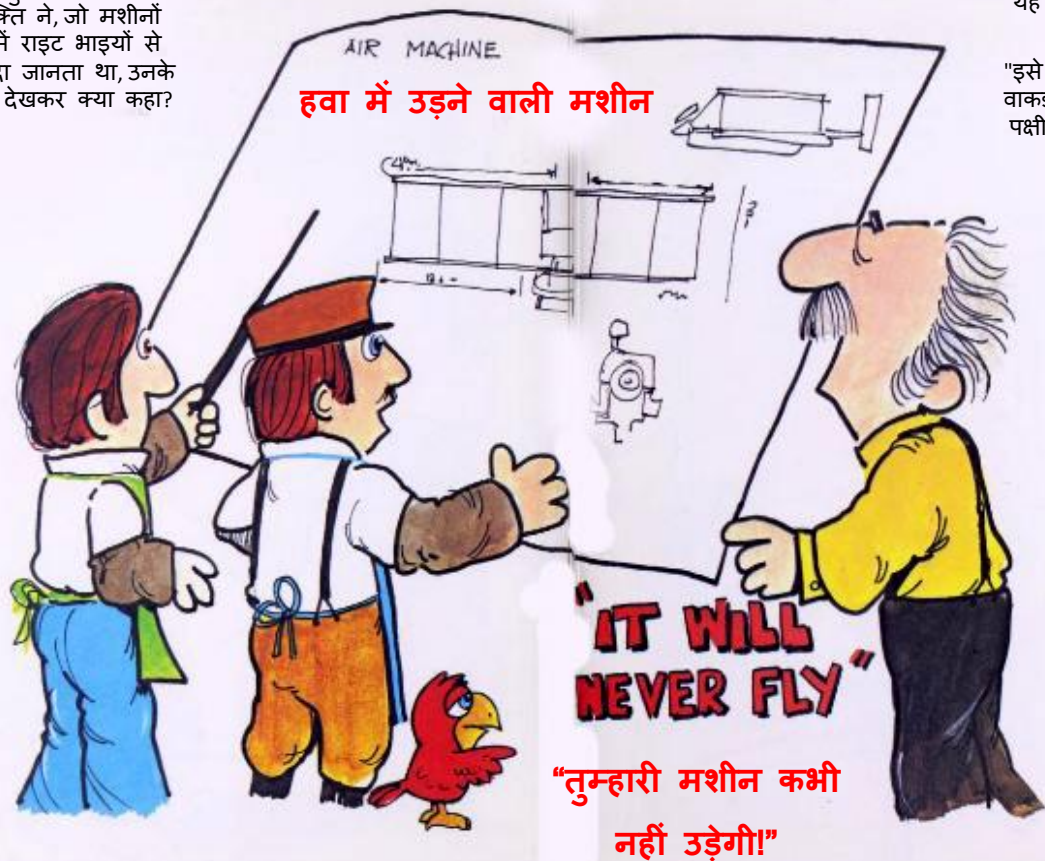
"सब्र रखो," पक्षी ने भाइयों को समझाया। "उदास मत हो और इतना गुस्सा भी मत करो। कई लोग नई तरकीबों को नहीं समझ पाते। और फिर आजतक किसी ने उड़ने वाली कोई मशीन बनाई ही कहाँ है की उसे समझ पाए।"

"और शायद वह इंसान सही भी हो। जिस तरह से तुमने इस यंत्र के पंख बनाएं हैं, उनमें कुछ तो गड़बड़ लगती है। वह बिलकुल भी मेरे पंखों जैसे नहीं हैं," पक्षी ने कहा।

"ठीक है। हम कोशिश करते रहेंगे," ऑरविल ने कहा।
"और अगर तुम्हें लगता है की हमने चित्र बनाने में कुछ गलती की है, तो तुम हमारी मदद क्यों नहीं करते? क्या हम तुम्हारे पंखों को और करीबी से देखकर उन्हें समझ सकते हैं?" विल्बर ने कहा।

"मुझे तुम्हारी मदद करने में ख़ुशी मिलेगी," पक्षी ने कहा।

पक्षी के कई सारे दोस्त राइट भाइयों की मदद करने आए। वह सब ऑरविल और विल्बर का काम देखने के लिए काफी उत्सुक थे।

"जब मैं उड़ता हूँ... पक्षी ने उन्हें बताना शुरू किया, "..तब मेरे पंखों के ऊपर के क्षेत्र में हवा का दबाव कम हो जाता है। पंखों के ऊपर के दबाव की तुलना में पंखों के नीचे हवा का दबाव ज़्यादा होता है और इस ज़्यादा दबाव के कारण ही मैं हवा में उठ पाता हूँ।"

"दिशा बदलने के लिए मैं अपने पंखों को थोड़ा सा मरोड़ता हूँ," पक्षी ने समझाया। "यह देखो!" विल्बर ने एक जूते के डब्बे को मरोड़ते हुए कहा। "देखो इसका निचला और ऊपरी हिस्सा थोड़ा सा हिला। शायद हमारे वायु यंत्र के पंख भी इसी तरह से हिलें तो काम बन जाए।"

"थोड़ी और पढ़ाई करते हैं," भाइयों ने कहा।

"और पक्षियों को देखते रहना," उस छोटे से पक्षी ने कहा।

ऑटो लिलिएंथल

और फिर राइट भाइयों ने और पढ़ना शुरू किया। इस बार उन्होनें पक्षियों के बारे में पढ़ा और ग्लाइडरों के बारे में भी। ग्लाइडर लगभग उस छोटे खिलौने की तरह ही थे जैसा उनके पिता सालों पहले अपनी विदेश यात्रा से लाये थे। उनमें कोई मोटर नहीं होती थी, और वह हवा में रह तो लेते थे पर ज़्यादा समय के लिए नहीं। ग्लाइडर हमेशा थोड़ी सी उड़ान भरने के बाद तैरते हुए ज़मीन पर आ जाते।

राइट भाइयों ने एक ऑटो लिलिएंथल नाम के एक व्यक्ति के बारे में पढ़ा जो जर्मनी देश में ग्लाइडर उड़ा रहे थे। पर उन्हें भी वही दिक्कत आ रही थी जो बाकी ग्लाइडर उड़ाने वालों को आ रही थी। उनके ग्लाइडर भी हवा में ज़्यादा समय तक नहीं टिक पा रहे थे। कुछ समय बाद ही वो ज़मीन पर आ गिरते।

"क्यों न हम अपना ही ग्लाइडर बनाना शुरू कर दें?"
विल्बर ने सुझाव दिया।

"क्या पता अगर हम सब्र से काम लें और हर पुर्ज़े को ध्यान से बनाएं तो शायद हम ऐसा ग्लाइडर बना दें जो हवा में लम्बे समय तक टिक पाए।", ऑरविल बोला।

तो फिर क्या था। दोनों ही भाइयों ने खूब ध्यान और सब्र के साथ धीरे धीरे अपना ग्लाइडर बनाना शुरू किया।

"मैं आशा करता हूँ की यह उड़े," विल्बर ने ग्लाइडर का काम ख़तम होने पर बोला।

"हाँ शायद उड़ ही जाए," पक्षी ने कहा। "पंख काफी सुन्दर लग रहे है। मगर अगर नहीं भी उड़ा तो तुम हिम्मत मत हारना। यह याद रखना की तुम सच में पक्षी नहीं हो तो कोई भी गड़बड़ होना कोई बड़ी बात नहीं है। बस सब्र रखना।"

पर राइट भाई जानते थे की कुछ चीज़ें -- ख़ास करके बहुत ही मज़ेदार चीज़ें -- बनने में लम्बा समय लेती हैं। कभी कभी आपको कुछ चीज़ों के लिए इंतज़ार करना पड़ता है।

दोनों भाई अपने ग्लाइडर को उड़ाने के लिए नार्थ कैरोलाइना में एक किटी हॉक नाम की जगह पर ले कर गए। किटी हॉक ग्लाइडर को उड़ाने के लिए एक बेहतरीन जगह थी क्योंकि वहां पर बहुत सारी रेत थी।

वहां अगर ग्लाइडर उड़कर गिरता भी तो उसके हिस्से टूटने से बच जाते।

वह अपने ग्लाइडर को खींचकर एक छोटी सी पहाड़ी पर ले गए। फिर एक भाई ग्लाइडर पर चढ़ गया और दूसरे ने पहाड़ी से ग्लाइडर को धक्का दिया।

"यह उड़ रहा है!” दोनों भाई जोश में चिल्लाये।
पर फिर थोड़ी ही देर बाद उनका ग्लाइडर ज़मीन पर आ गिरा, बिलकुल उस बचपन वाले खिलौने की तरह।

क्या तुम जानते हो की उनका ग्लाइडर हवा में ज़्यादा देर क्यों नहीं उड़ पाया?

राइट भाई नहीं जानते थे। और न ही वह छोटा सा पक्षी। "मुझे तो बस एक बात पता है। यह ग्लाइडर तो मेरे भी सब्र का इम्तेहान ले रहा है," पक्षी ने कहा।

"चलो अब इतना भी परेशान मत हो प्यारे पक्षी। याद है हमारे पिताजी ने क्या समझाया था?“उनमें से एक भाई ने पक्षी को कहा। "जीवन में बहुत सारी चीज़ें मुश्किल होती हैं पर अगर हम कोशिश करते रहे तो हम जो चाहे वह कर सकते हैं।"

"हमें किसी तरह पंखों के नीचे हवा के दबाव को और मज़बूत बनाना होगा।", ऑरविल ने कहा। "ज़्यादा दबाव ग्लाइडर को ऊपर की ओर उठाएगा और लम्बे समय तक हवा में रहने देगा।“
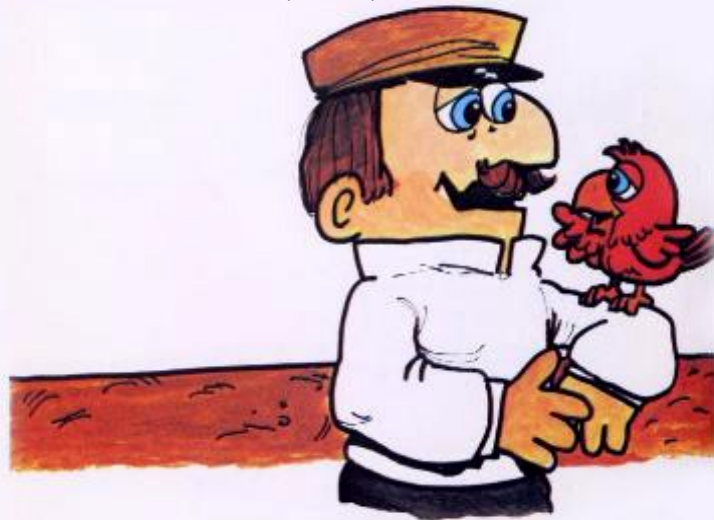
"क्या तुम अपने ग्लाइडर में एक इंजन लगा सकते हो?“ पक्षी ने पूछा। "क्या उससे तुम्हारा काम आसान हो जायेगा?“

"इंजन ज़्यादा हवा को पंखों के नीचे भेज सकता है और उस कारण ग्लाइडर के नीचे हवा का दबाव तेज़ हो जायेगा। शायद फिर हमारा ग्लाइडर ज़्यादा समय तक हवा में रह पाए," विल्बर ने कहा।

दोनों भाइयों ने अब इंजिनों के बारे में और पढ़ना शुरू किया। काफी पढ़ने के बाद उन्होनें कुछ ऐसे लोगों को चिट्ठियां लिखीं जो इंजन बनाते थे।

"हम एक इंजन खरीदना चाहते हैं," उन्होनें लिखा। "हम इंजन को एक ग्लाइडर में डालेंगे और एक विमान बनाएंगे। विमान एक ऐसा ग्लाइडर होता है जिसमें इंजन हो।"

भाइयों ने चिठियाँ डाकघर में जमा कराईं और फिर जानते हो क्या हुआ?

इंजन बनाने वाली कंपनियों ने उन्हें जवाब भेजे। एक भी कंपनी उन्हें इंजन बेचना नहीं चाहती थी।

"मैं नहीं चाहता की मेरा इंजन किसी आलतू-फालतू चीज़ में इस्तेमाल हो," एक व्यक्ति का जवाब आया। "और अगर लोगों को उड़ना ही होता, तो इंसान पंखों के साथ ही पैदा होते!"

तुम्हें क्या लगता है ऐसे जवाब पढ़कर राइट भाइयों ने क्या करने का सोचा होगा?

उन्होनें अपना दिमाग लगाया और अपने हाथों का प्रयोग कर खुद के लिए एक इंजन बना डाला।

इस काम में काफी समय लगा, बहुत ही लम्बा समय। पर राइट भाइयों को इससे कोई आपत्ति नहीं हुई। अब तक वह समझ चुके थे की उड़ने से संभंधित किसी भी काम में समय तो लगता ही है।
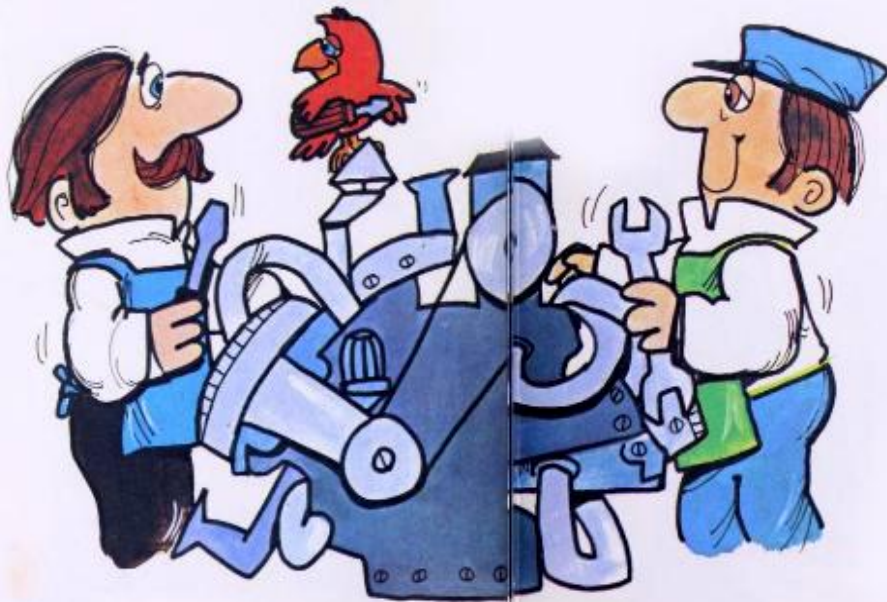
"आखिरकार! बन ही गया हमारा इंजन," ऑरविल बोला।

"मुझे पूरा भरोसा है की यह काम करेगा," विल्बर ने कहा।
पर क्या तुम्हें लगता है की वो इंजन सही से चला?

"इस प्रोपेलर को तो देखो! यह घूम ही नहीं रहा। हमारा इंजन तो चलना शुरू ही नहीं होगा," भाइयों ने कहा।

"मैं इंजिनों के बारे में तो कुछ नहीं जानता," पक्षी ने कहा। "बस इतना जानता हूँ की मुझे उड़ना सीखने में कुछ ही दिन लगे थे पर तुम्हें तो साल लग रहे हैं।"
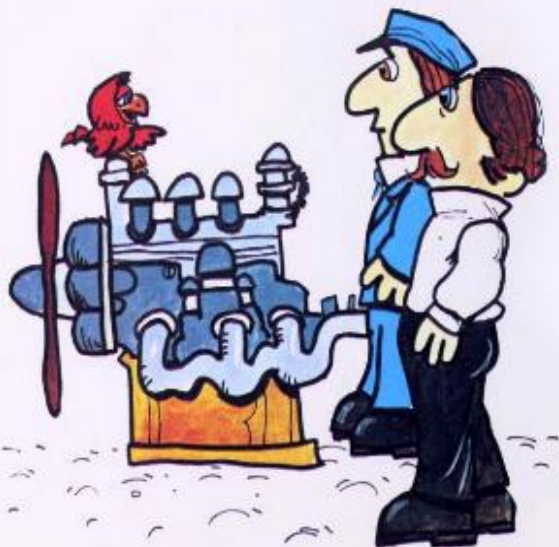
"कोई बात नहीं। हम सब्र से काम लेंगे," ऑरविल ने कहा। "हम इस बात से परेशान नहीं होंगे और हिम्मत भी नहीं हारेंगे," विल्बर बोला। "हम कोशिश करते रहेंगे।"

और उन्होनें यही किया। वह अपने इंजन पर और काम करते रहे। और फिर एक दिन उनका इंजन चल पड़ा!
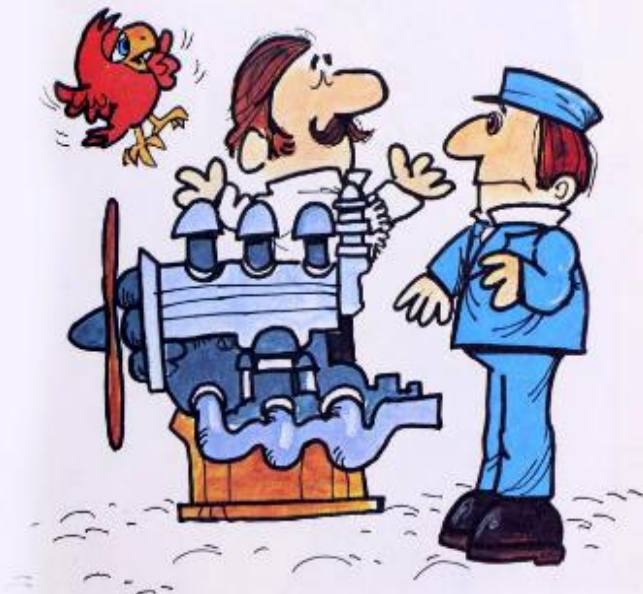
उन्होनें जैसे ही इंजन को चालू किया, एक तेज़ सी आवाज़ आयी और फिर गर्राते हुए उनका प्रोपेलर घूमने लगा।

"आखिर हो ही गया! हो ही गया!" पक्षी चिल्लाया।

"यह तो चल रहा है!“ दोनों भाई भी चिल्लाये।
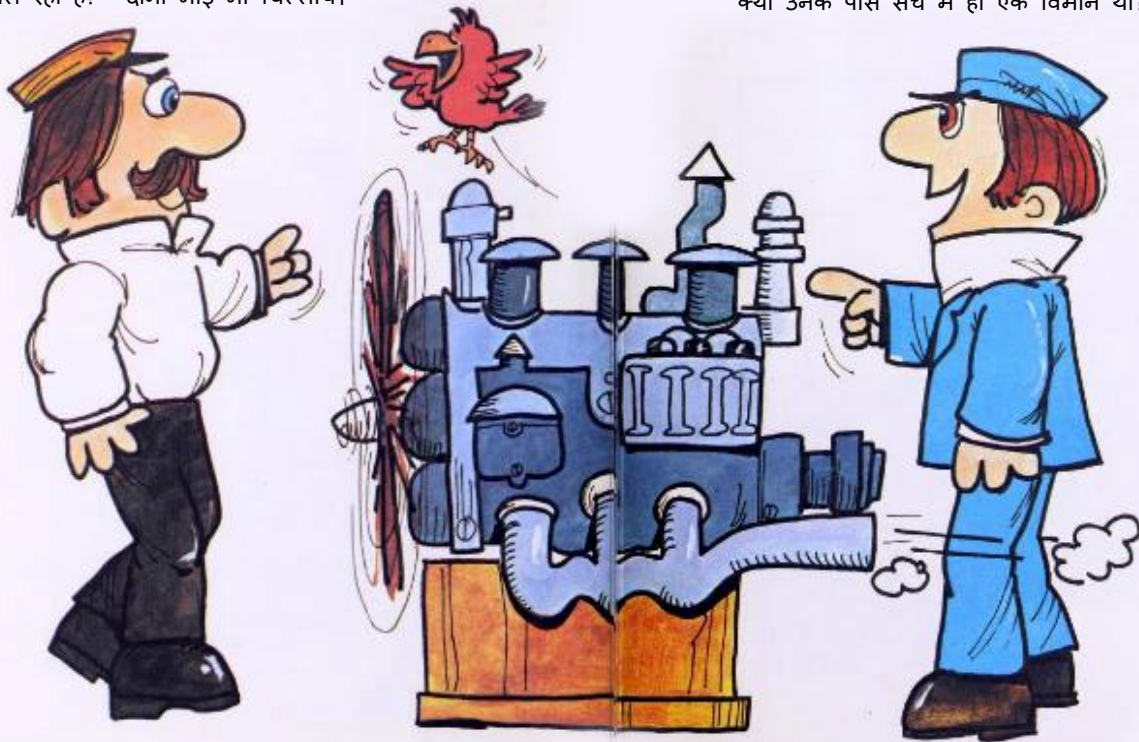
"अब हमारे पास एक इंजन है। अब हम इसे अपने ग्लाइडर में डालेंगे। फिर शायद हमारे पास एक असली का विमान बन जाए। एक ऐसा जो एक पक्षी की तरह उड़ पाए।“

क्या उनके पास सच में ही एक विमान था?

नहीं , असल में नहीं था।

जब उन्होनें इंजन को ग्लाइडर में डाला, तो इंजन तो खूब अच्छे से काम कर रहा था। पर इंजन इतना भारी था की

उसके वजन के कारण ग्लाइडर उड़ नहीं पाया।

"अब हम क्या करेंगे?" भाइयों ने सोचा।

"क्या तुम अब इस विमान पर काम करना बंद कर दोगे?" पक्षी ने पूछा। इस बार वह काफी चिंतित था।

"नहीं, हम थोड़ा और काम करेंगे," भाइयों ने कहा।
उन्होनें एक बार फिर से अपने सारे चित्रों को देखा।
अपनी योजनाएं भी बदलीं।
ग्लाइडर में कुछ बदलाव किये और कुछ अपने इंजन में भी।
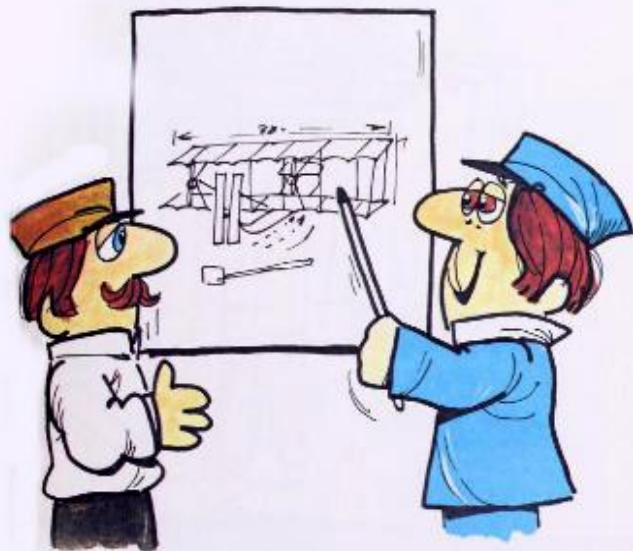
और फिर एक दिन किटी हॉक पर एक अजूबा हुआ। गर्राते हुए इंजन के साथ उनका ग्लाइडर ज़मीन से उठते हुए उड़ान भरने लगा। "यह उड़ रहा है! यह उड़ रहा है!" ऑरविल चिल्लाया। वह ग्लाइडर को दिशा दे रहा था।

"यह एक बड़े पक्षी की तरह हैं।" असल में उनका विमान एक पक्षी की तरह नहीं उड़ा, पर इतिहास में उस दिन पहली बार एक विमान ने उड़ान भरी थी।

उस विमान को उड़ाने में राइट भाइयों को बहुत ही लम्बा समय लगा, पर जब वह उड़ा तो उनकी ख़ुशी का ठिकाना नहीं था। वह अब जान चुके थे की सब्र का फल मीठा होता है।
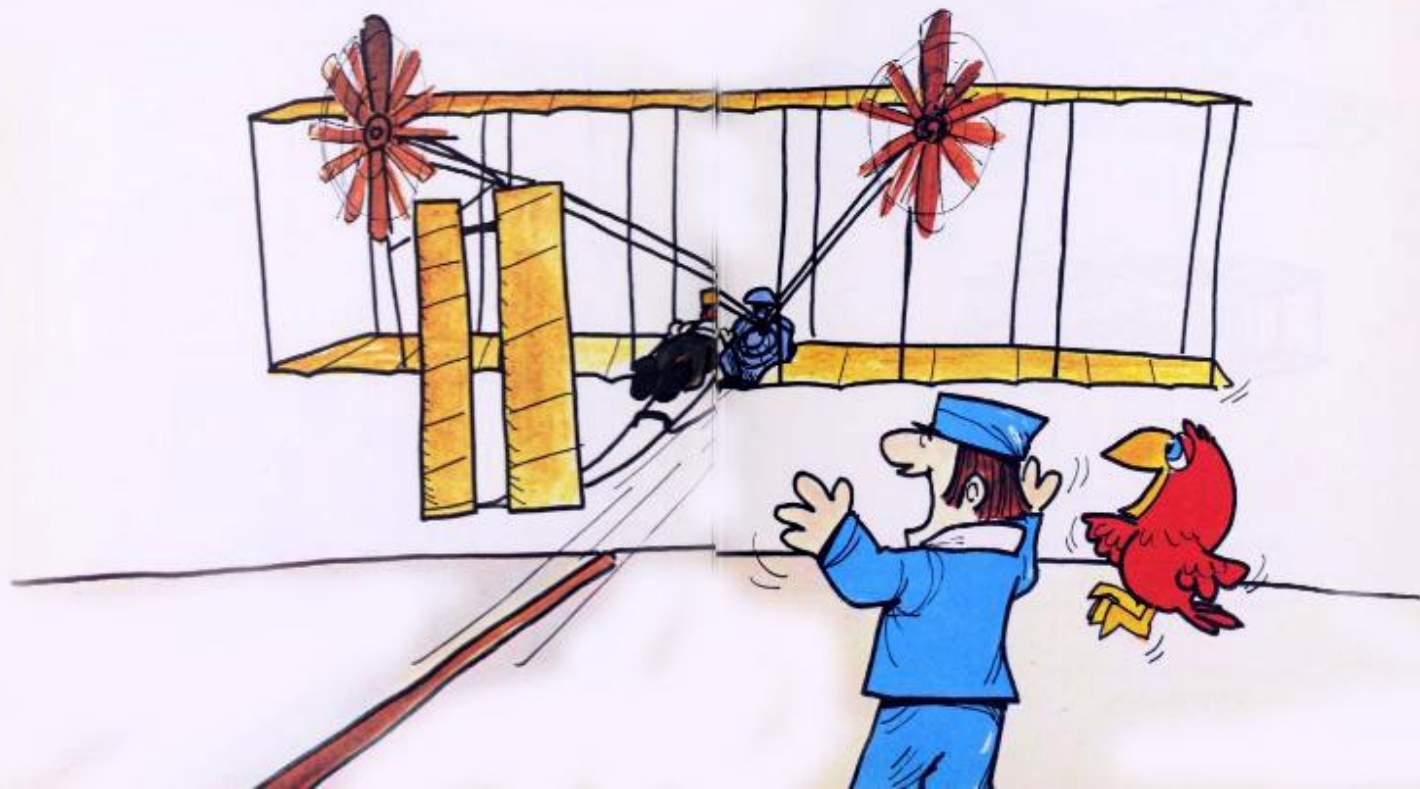
अब जब तुम कभी भी हवा में किसी हवाई जहाज को देखो तो यह विचार ज़रूर करना की पहला विमान बनने में कितना लम्बा समय लगा। तुम यह भी विचार करना की अगर सब्र जैसी चीज़ का तुम अपने जीवन में पालन करो, तो तुम्हारे जीवन में क्या-क्या बदलाव आ सकते हैं।

बेशक तुम पहले विमान का आविष्कार नहीं कर सकते। उसका आविष्कार तो राइट भाइयों ने कर ही दिया है। और शायद तुम जो असल में करना चाहते हो वो विमान उड़ाने से बहुत अलग हो। पर यह ज़रूर सोचना कि सब्र तुम्हारी उस काम को करने में क्या मदद कर सकता है।

और फिर शायद तुम्हें अपने काम को करने में बेहद मज़ा आए...ठीक वैसे ही जैसे हमारे धैर्यवान दोस्त राइट भाइयों को आया था।

धैर्य से राईट भाई अपने मुहिम में सफल हुए

राईट भाई की पहली उड़ान

ऐतिहासिक तथ्य

Historical Facts -

विल्बर राईट का जन्म 1867 में और उसके भाई ओरिविल का जन्म 1871 में हुआ. उन्होंने अपने जीवनकाल में "उड़ान" को लेकर सबसे महत्वपूर्ण कार्य किया.

उन्होंने 1899 में अपना पहला ग्लाइडर बनाया और 1900 में उसे किटी-हॉक, नार्थ कैरोलिना, अमरीका में पहली बार उड़ाया. शुरू में उन्होंने 12-हॉर्सपावर का एक पेट्रोल इंजन इस्तेमाल किया. उसमें दो प्रोपेलर थे. हवा से भारी पहले हवाई जहाज़ की सफल उड़ान उन्होंने दिसम्बर 17, 1903 को किटी-हॉक में की. उस नज़ारे को चार आदमियों ने और एक लड़के ने देखा. जिस दिन उन्होंने उड़ान भरी उस दिन विल्बर 36 साल का था और उसका भाई ओरिविल 31 साल का. उनकी पहली सफल उड़ान सिर्फ 59 सेकंड की थी. उस साल राईट भाईयों ने क्रिसमस का त्यौहार बड़े जश्न के साथ मनाया.

सब्र और धीरज के फल से राईट भाई काफी पहले से परिचित थे. अनुभव के आधार पर उन्हें अपने डिजाईन में कई बार बदलाव करने पड़े. उन्हें रेतीले मैदानों और खेतों में उड़ान को लेकर काफी प्रयोग करने पड़े. उन्होंने एक विंड-टनल का भी निर्माण किया. उसमें वो यह देखते थे कि हवा के बदलाव का उनके ग्लाइडर और हवाई जहाज़ पर क्या फर्क पड़ेगा. उनका विंड-टनल काफी जुगाड़ू था – वो एक गत्ते का बड़ा डिब्बा था जिसके एक सिरे पर एक हवा का छोटा पंखा लगा था. इस विंड-टनल में वो कागज़ के पंखों के साथ प्रयोग करते थे और हवा के वेग का उनपर प्रभाव देखते थे.